वाप वच्चों को समझाते है कि यहां पर जव वच्चों को याद मे विठाते है तो इस वात को कोई मनुष्य नहीं समझते है। वच्चे ही समझते है कि इस याद की यात्रा से ही हम मुक्ति धाम को जा पहुंचेंगे। वाप एक-2 युक्ति जो वताते है वो नई है। नई दुनियां के लिये नई युक्ति। वच्चे जानते है कि वाप याद की यात्रा सिखाते है। जिससे जो भी पाप है वो सव मिट जाते है। ऐवर हैल्दी सदैव निरोगी काया वनती है। निरोगी काया निरोगी राज्य प्राप्त करने लिये वच्चे पुरुषार्थ कर रहे है। अपने-2 स्टैट्स परभी पुरुषार्थ करते है। वाप से कोई भी चीज सहज मिलती है। वाप का तो वच्चों पर लव होता है। यह वेहद का है ही वेहद का सुख देने वाला। तुम वच्चे जानते हो हम वावा को याद करते-2 शान्ति धाम मे जाकर फिर सुख धाम मे जाकर पहुंचते है। भक्ति की भेंट मे यह कितना सहज है। वच्चे जानते है कि स्वराज्य की स्थापना तो होनी ही है विनाश भी होना ही है। वच्चों को अन्दर मे खुशी रहती है सिर्फ वाप को याद करने से। वच्चों को यह एक ही सब्जेक्ट है वाप को याद करने की। और कोई सब्जेक्ट नहीं देते है। सयाने वच्चे जो होते है उनको कमाई का ओना रहता है। भल दिन रात अपना धन्धा धोरी करते है परन्तु उस कमाई और इस कमाई मे फर्क वहुत है। जांच करनी है कि हमारी कमाई जास्ती किस मे है। उस पाई पैसे की कमाई मे जास्ती समय देना है कि वाप की याद मे?जास्ती देना है?वाप तो वच्चों की वुधी का ताला खोलते है। वच्चे सम्मुख वैठे है किसके साथ.? निश्चय है कि हम वाप दादा के सामने वैठे है। यह भी कोई नई वात नहीं है। कल्प-2 हम वाप दादा के पास वैठ नालेज पाकर वर्सा लेते है। और कोई मनुष्य इन वातों को नहीं जानते यह एक ही पढाई है रूहानी वाप की। और कहीं भी रूहानी वाप पढा नहीं सकते है वुधी से काम लेना है। कहीं भी कोई संशय हो तो पुछना चाहिये। इसमे मूंझना नहीं चाहिये। यूं तो यह नालेज ऐसी है आपेही सव समझ मे आ जाता है। कुछ पुछने की दरकार ही नहीं रहती। एक तो वुधी का योग ऊपर लगा रहना चाहिये जिन्न के मुआफिक। जिन्न की कहानी वताते है ना। कहता था कि हमको काम नहीं देंगे तो हम खा जावेंगे। वेहद के वाप भी कहते है कि हमको याद नहीं करेंगे तो तुमको माया काल खा जावेगा। जास्ती कोई मेहनत नहीं है। वुधी मे वैठ जाता है कि यह दुनियां खत्म होनी है। इससे हम दिल लगा कर क्या करेंगे। तो फिर पुरानी दुनियां से ममत्व मिटता जावेगा। अव वावा तुमको देखते है तुम वावा को देखते हो। वावा की वुधी है कि अव हम घर जा रहे है। फिर राजधानी मे आवेंगे तत त्वम। तुमको भी यही वुधी मे रखना है। थोडा माया विघ्न डालती है परन्तु सावधान रहना चाहिये। ऊंच ते ऊंच भगवान पढाने वाला है तो जरूर पद भी ऊंच ते ऊंच ही पावेंगे। सिर्फ याद की ही यात्रा मे रहना है। इसमे वच्चे मूंझते क्यों है?जरा भी इसमे मूंझने की दरकार नहीं है। यह भी वाप ने समझाया है तुम्हारे से मै कुछ भी नहीं लेता हूं। मै तो देने आया हूं। तुमको सुख धाम का मालिक वनाने आया हूं। हम ईश्वर को देते है यह सोचना भी पाप है। क्योंकि ईश्वर तो दाता है ना। कोई के भी अन्दर मे आ है कि हम देते है तो इतना कहने पर ताकत कम हो जाती है। यह भी जानते हो कि शिव वावा को राजाई आद कुछ भी नहीं चाहिये। वावा तो आये ही है वच्चों को विश्व का मालिक वनाने। सो भी कल्प-2 आते है। नई वात नहीं है कल की ते वात है। कल हम मालिक थे फिर चक्र खाया है। अव नाटक पुरा होता है वाप आये है राजयोग सिखाने। ऐसी कोई वस्तु नहीं जो तुमको अटक डाले। वाप की याद मे कोई अटक कैसे डाल सकते है। इसमे विघ्न कैसे डाल सकते है। लौकिक वाप को याद करने मे कव विघ्न पड़ेगा क्या। यह भी निश्चय है कि हमको वेहद के वाप की ही मत पर चलना है। वो इस साधारण तन दवारा सिखा रहे है। नहीं तो यह चित्र आदकहां से आवे। और फिर वनना प्रजापिता ब्र,कु,कु,। भगवान नई रचना रचते है। प्रजापिता ब्रहमा दवारा। ब्राहम्ण तो तुम्ही हो। वच्चों को पता है कि हम अभी ब्राहम्ण कुल के है। पहले-2 ईश्वरिय कुल के फिर दैवी कुल के ...

सारा चक्र बुद्धि में है। इतनी सहज बातें फिर बैलनी क्यों चाहिये। याद रहने से ही सदैव खुशी रहेगी। झरमुई झंगमुई में लग जाने से यह बातें भूल जाती हैं। बच्चों को याद की यात्रा में रहने के लिये भी बच्चों को समय मुकर्र करना चाहिये। भक्ति के लिये भी समय फिक्स करते हैं नां। तुमको भी समय फिक्स करना चाहिये। नौकरी से जब छूटते हैं तो घूमने फिरने जाते हैं। सवेरे को भी जा सकते हैं। पुरुषों को तो फिर भी कभी धंधे का झंझट रहता है। तुम माताओं आदि को तो कोई भी हंगामा आदि नहीं है जिससे कि बुद्धि जावे। तुमको तो घर बार सम्भालना है। बच्चों को स्कूल भेज दिया फिर बैठ बाप को याद करना है। कभी भी समय मिले तो वेस्ट नहीं करना चाहिये। बाबा कहते रहते हैं कि याद का चार्ट रखो तो बहुत उन्नति होगी। अपना ही कल्याण करना चाहिये। सुना अनसुना नहीं करना चाहिये। बाबा समझाते हैं कि अपना चार्ट रखने से बच्चों की उन्नति बहुत होगी। और खुशी भी होगी। औरों को आप समान बनावेंगे तो भी खुशी होगी। गाया भी जाता है नां हीरे जैसा जन्म अमोलक। दुनिया में कक्खा आदि खाते रहेंगे तो गंवा देंगे। इसमें जास्ती गफलत नहीं करनी चाहिये। और बच्चों को अन्दर में खुशी बहुत रहनी चाहिये। यह तो बुद्धि में है नां कि मैं यह परीक्षा पास कर रहा हूं। तत त्वम। तुम भी यही धन्धा कर रहे हो। और फिर क्या चाहिये। प्रवाह थी पार ब्रह्म में रहने वाले परमात्मा की वो मिला फिर बाकी क्या। विश्व की बादशाही मिल जाती है। तुम बच्चों को अभी मिल रही है इसलिये तो सदैव हर्षित रहना है। तुम्हारे जैसा सौभाग्यशाली और कोई मनुष्य हो नहीं सकता है। बशर्ते (जबकि) श्री मत पर चलते रहो। तो तुम्हारी बहुत ऊंची तकदीर है। जानते हो कि शिव बाबा हमको राजयोग का इम्तिहान पढ़ा रहे हैं। बच्चों को अन्दर में बहुत खुशी रहनी चाहिये। सारे विश्व में तुम्हीं हो जिनको भगवान पढ़ा रहे हैं। मनुष्य जब बिमार पड़ते हैं तो भगवान को याद करते हैं नां। तुम तो खुशनसीब हो। बाप याद दिलाते हैं और समझाते हैं बनना तो सबको है ही। अब अपना जीवन याद की यात्रा से हीरे जैसा बना लो। यह बहुत फायदे का कारोबार है। गाडली स्टूडेण्ट लाईफ इज़ द बेस्ट आफ इन्कम है। बच्चे जानते हैं कि हम स्वर्गवासी विश्व का मालिक बन रहे हैं। अपने को देखते रहो कि हम क्या कर रहे हैं? कहीं स्तुति तो नहीं करते हैं। डिले इज डेन्जर (

) बाप ने पहले समझाया है कि तुमको कितना माल-टाल दिया। अब तुम्हारे हाथ में क्या है। अब फिर बाप आया है देने के लिये। यह भी जानते हो कि कल्प-2 ऐसे ही बाप के सामने हम आकर बैठते हैं। इसमें भक्ति का रिंचक भी निशान नहीं है। टुच्च बातें कोई से भी नहीं करो। हम को बाबा पढ़ाते हैं बस कितना सहज है। बाबा कहते हैं कि मुझे याद करो और वर्सा लो। यही है ज्ञान जिससे सदगति होती है। बाकी भक्ति से तो दुर्गति ही होती आई है। इसलिये कहा जाता है सेकेण्ड में जीवन मुक्ति। बच्चों को समझाते तो बहुत हैं शिव के भक्तों के पास जाओ। बोलो यह तुम क्या कर रहे हो। जिनकी पूजा कर रहे हो वो हमको पढ़ा रहे हैं। पढ़ा कर गये थे। इसलिये ही अब याद करते हो। अब फिर बाबा कहते हैं कि मामेकम् याद करो तो विकर्म विनाश हो जावेंगे। आत्मा पवित्र हो जावेगी। यह बहुत आसान अक्षर है सबको आगे चल कर पसन्द आवेगा। बुढ़ियों के लिये तो बहुत सहज है एक अक्षर याद नहीं कर सकते हो वण्डर है नां। अपने पति को याद कर सकती इस बाप ने क्या गुनाह किया है जो कि याद नहीं कर सकते हो2 यह तो भला बुद्धि में है नां कि हम स्वर्गवासी बन रहे हैं। कि यह भी भूल जाते हो। बच्चों को समझाया गया है कि आत्मा जब भी शरीर लेती है तो वो ही सुख दुःख भोगती है। पुनर्जन्म तो होता ही है नां। बच्चों को याद के लिये समय फिक्स करना चाहिये। दैवी गुण भी धारन करने हैं। जबकि बहुत मीठा बनना है कोई से भी लड़ना झगड़ना नहीं है। लिखा भी हुआ है 16 कला सम्पूर्ण सम्पूर्ण निर्विकारी तो उसमें मीठा बनना भी तो गुण है नां। तो कोई भी उल्टा सुल्टा काम नहीं करेंगे। हां जावें तो अपना कान पकड़ते रहना है तो सावधानी रहेगी। भक्ति मार्ग में बुढ़िया याद करती होंगी कृष्ण को लेकिन यहां तो कहा जाता है नहीं बाप को याद करना है। ऊंच ते ऊंचे पद पाना है तो पहले भी तो ऊंचे को करना है नां। ओम